मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

अंक : 28

माह : मार्च 2025

गीतकार

जुगलकिशोर त्रिपाठी

प्राथमिक विद्यालय बम्हौरी

मऊरानीपुर, झांसी

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि टीम

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं तुमको...
गीत- इस चित्र में कौन करता क्या?

कक्षा- 2 687

पाठ- 2, पास-पड़ोस

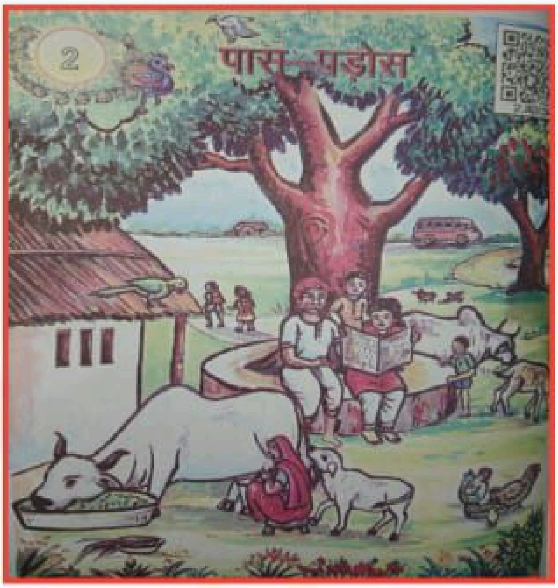

इस चित्र मैं कौन करता क्या?
क्या ग्रामीण परिवेश रमता यहाँ?

वट-वृक्ष नीचे बना एक आसन,
है गोल आकृति-सा, सुन्दर आसन।।
पढ़ते हैं दादा-2, संग पोते यहाँ,
बताऊँ तुम्हें कौन रहता यहाँ।।

है सामने एक कुटिया सुनहरी,
हरी चोंच का तोता, बन बैठा प्रहरी।।
कुछ बच्चे स्कूल-2, जाते वहाँ,
हाँ, ग्रामीण परिवेश रमता यहा।।

इकाई ओर दादी गौ दुह रही हैं,
गौ संग बछड़, वो कुछ खा रही है।
बकरी व मुर्गी-2, फिरते यहाँ,
हाँ, ग्रामीण परिवेश रमता यहाँ।।

कुछ दूर पर देखो, बस जा रही है,
चिड़ियों की सुमधुर सुध्वनि आ रही है।
हरी घास छायी-2, देखो यहाँ,
बताऊँ तुम्हें कौन करता यहा।।
इस चित्र में कौन-2, करता क्या?
क्या ग्रामीण परिवेश रमता यहा?

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

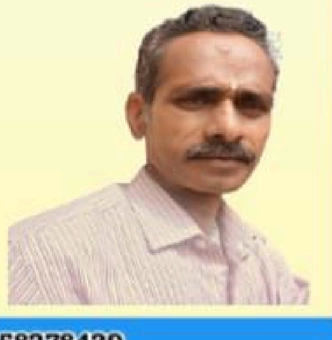

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं तुमको...
गीत- बहुत प्यारी है ये चिड़िया बया..

कक्षा- 2

688

पाठ- 3, चिड़िया बया

बहुत प्यारी है ये चिड़िया बया।
करे काम दिन-भर-2, ये चिड़िया बया।।

लाकर के तिनके, महल ये बनाती,
उन्हें ऊँची डाली पे, ये लटकाती।।
खेतों से दाना ला-2, चिड़िया बया,
करे काम दिन-भर, ये चिड़िया बया।।

दाना खिला देती, बच्चों को पानी,
नदियों से भर लाती, खुश होके पानी।
चहकती है आँगन में-2, चिड़िया बया,
करे काम दिन-भर, ये चिड़िया बया।।

तुम्हें दूर अपने से, जाने न देंगे,
दानों से आँगन को, हम भर ये देंगे।
भरें पानी ठण्डा-2, हम चिड़िया बया,
करे काम दिन-भर ये चिड़िया बया।।
बहुत प्यारी है ये, चिड़िया बया।।

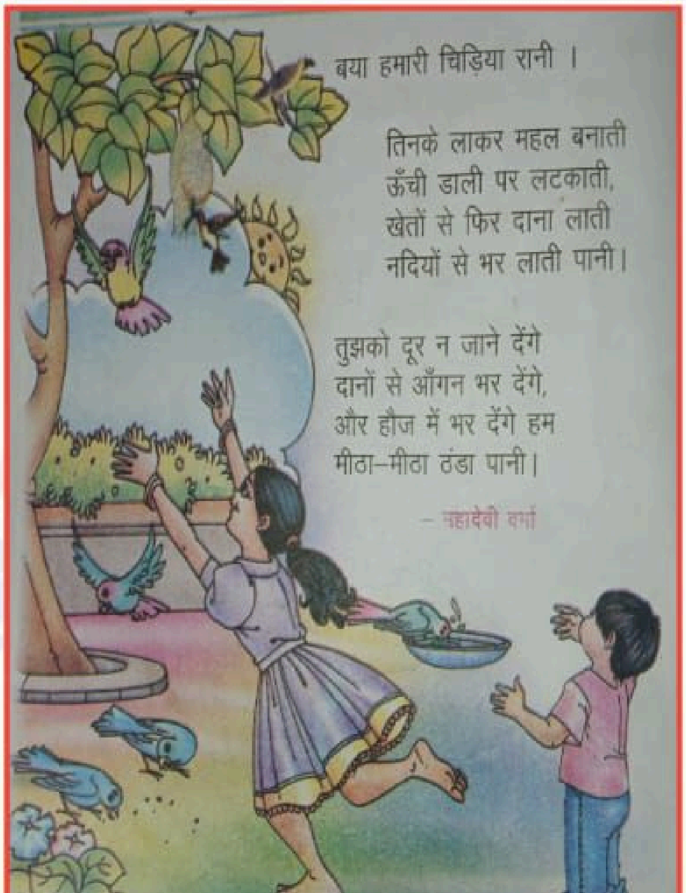
बया हमारी चिड़िया रानी ।

तिनके लाकर महल बनाती
ऊँची डाली पर लटकाती,
खेतों से फिर दाना लाती
नदियों से भर लाती पानी।

तुझको दूर न जाने देंगे
दानों से आँगन भर देंगे,
और हौज में भर देंगे हम
मीठा–मीठा ठंडा पानी।

– महादेवी वर्मा

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

तर्ज- शुरु हो रही है प्रेम कहानी..
गीत- बच्चो! सुनो तुम एक कहानी..

कक्षा- 2
(अंग्रेजी)
पाठ- 1,
मुर्गी के दो चूजे

689

बच्चो! सुनो तुम एक कहानी।
रानी सुनो तुम, दीप गुनो तुम, सुनु कल्याणी।।
बच्चों! सुनो तुम, एक कहानी...

थी सफेद मुर्गी अति सुन्दर,
पीली-लाल दो चूजे मनोहर।
पीले को थीं, पीली चीजें, अति प्रिय मानी,
बच्चों! सुनो तुम, एक कहानी।।

लाल को लाल ही, वस्तु लगें प्रिय,
लाल वस्तु खाऊँ, सोचे हिय।
इक दिन लाल चिली को देखा, की मनमानी।।
बच्चों! सुनो तुम एक कहानी।।

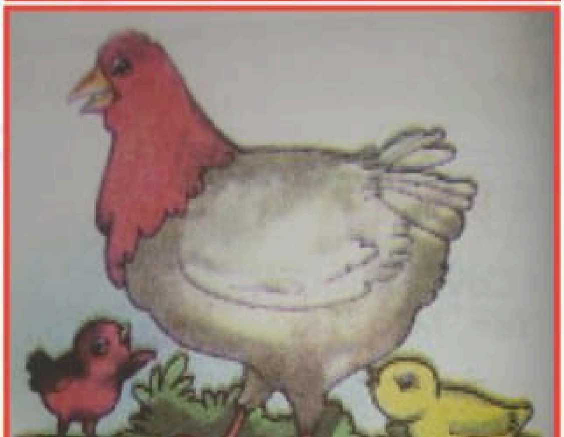

लाल चिली को ज्यों ही खाया,
गरम चिली थी, वह चिल्लाया।
ये तो गरम है, दिखती नरम है, ओ माँ पानी,
बच्चों! सुनो तुम, एक कहानी।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

तर्ज- शुरु हो रही है प्रेम कहानी..
गीत- बताऊँ तुम्हें नयी बातें पुरानी..

कक्षा- 2 (अंग्रेजी)

690

lesson- 1
Early to bed

बताऊँ तुम्हें, नयी बातें पुरानी।
मानोगे जो तुम, सुनु लोगे जो तुम, बने जिन्दगानी।।
बताऊँ तुम्हें नयी, बातें पुरानीं...

रोज सुबह जल्दी तुम उठना,
जल्दी सोना, जल्दी जगना।
देर से सोओ, सब कुछ खोओ, है ये बेईमानी,
बताऊँ तुम्हें नयी बातें पुरानी।।

सुबह खुले न आँख तुम्हारी,
शाला न जाओगे, दुबिधा भारी।
द्वार तुम्हारे, सखा पुकारें, धो मुँह, लो पानी,
बताऊँ तुम्हें नयी बातें पुरानी।।

जल्दी उठकर, घूमने जाओ,
स्वस्थ्य रहे तन-मन हरषाओ।
बुद्धि बढ़ेगी, बाधा हटेगी, सुनलो सुहानी,
बताऊँ तुम्हें नयी बातें पुरानी।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

691

तर्ज- सावन के झीलों ने मुझको...
गीत- देवी सरस्वती सिर मैं झुकाऊँ..

कक्षा- 3
संस्कृत

सरस्वती वन्दना

देवी सरस्वती! सिर मैं झुकाऊँ,
शारद की महिमा तुमको बताऊँ।
वीणा को धारण करती सदा जो,
शारद की महिमा तुमको बताऊँ।।

देवि! तुम्हारे पदकमलों में,
नमन करूँ तेरे चरणों में।
तुम्हें सदा देखूँ सपनों में...
सारे जग संग तुमको में ध्याऊँ।।
शारद की महिमा तुमको बताऊँ।।

सदगुण ज्ञान हमें दो माता,
हम सब ध्याते, मैं भी ध्याता।
देवि शारदे! तुम्हें बुलाता,
सरस्वती ढ़िंग मैं, पढ़ूँ और पढ़ाऊँ।।
शारद की महिमा तुमको बताऊँ।।
देवि सरस्वती............बताऊँ।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

तर्ज- साधारण गीत
गीत- गाड़ी जाती देखो बच्चों!

कक्षा- 3 692
संस्कृत
गन्त्री गच्छति

गाड़ी जाती देखो बच्चों,
आगे जाती सँभलो बच्चों!
पीछे जाती दूर हटो सब,
ऊँचे जाती, आ-हा बच्चों!

नीचे जाती, धीरे जाती,
जल्दी से समतल पर आती।
टेढ़ी मोड़ों पर हो जाती,
फिर पथ पर वह सीधी जाती।।

गाड़ी जाती, गाड़ी जाती,
लम्बी रेल सभी को भाती।
बच्चों को अति प्यारी लगती,
करे गतिबिधि सुन्दर साथी।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

तर्ज- शुरु हो रही है प्रेम....

गीत- करुँ वन्दना देश की, जो है जानी,

कक्षा- 5

693

संस्कृत

वन्दे सदा स्वदेशम्

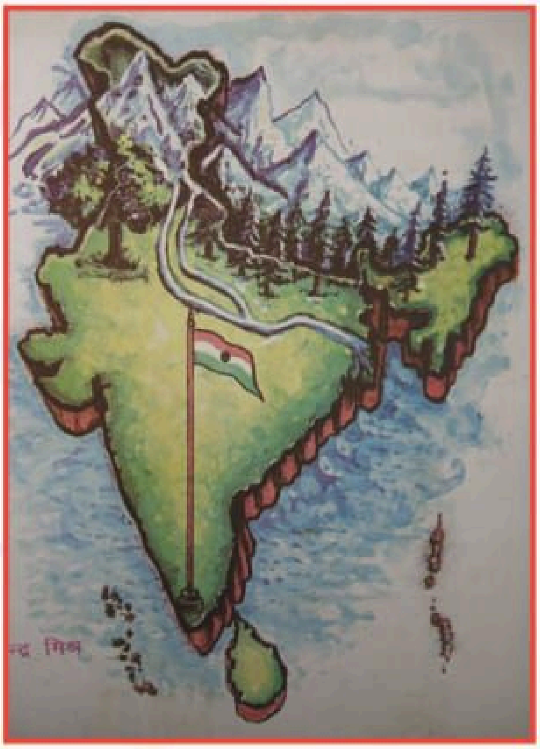

करुँ वन्दना देश की, जो है जानी।
ऐसा मेरा, देश भी तेरा, है धरती सुहानी।।
करुँ वन्दना................है जानी।

सुखमय, सुन्दर देश हमारा,
गंगा तिलक भाल पे प्यारा।
प्रकृती अनोखी..हरियाली है..विविध बखानी,
करुँ वन्दना देश की, जो है जानी।।

झण्डा है त्रिवर्णमय इसका,
हरा, सफेद, केसरी रंग का।
मध्य भाग में, नदी नर्वदा, बहती सुहानी,
करुँ वन्दना देश की, जो है जानी।।
ऐसा मेरा, देश है तेरा, है धरती सुहानी,
करुँ वन्दना..................जो है जानी।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

तर्ज- शुरु हो रही है प्रेम....
गीत- यह मेरा परिवार है भाई,

कक्षा- 5
संस्कृत

694

लघु परिवार:

यह मेरा परिवार है भाई,
छोटा है ये, पर अच्छा है, प्रेम है भाई।
यह मेरा परिवार है भाई-2।।

परिजन, पालक, मातु-पिता सब,
सुखी, दीन नहीं कोई धनी अब।
अति विनम्र है मेरी बहना, न कोई कसाई,
यह मेरा परिवार है भाई।।-2

यह मेरा सुन्दर-सा भ्राता,
भाई-बहन में भेद न आता।
न ही कोई, कभी दु:खी था, न अब भाई।,
है आदर्श घराना भाई।।
यह मेरा परिवार है भाई,
सभी देखकर, हों प्रसन्न लख, इसको सदाहीं,
यह मेरा परिवार है भाई। ।-2

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

तर्ज- आये हो मेरी जिन्दगी में....
गीत- माटी है मेरे देश की.....

कक्षा- 3

पँखुड़ी 695

प्रार्थना

माटी है मेरे देश की, ये जल है देश का,
हैं देश की हवाएँ हाँ-2, उर देश-प्रेम बसता।
माटी है मेरे देश की..............।

प्रभु हम सरस बनें सब, हो मान सदा इसका,
माटी है मेरे देश का, ये जल है देश का।।
हैं देश की हवाएँ, उर देश-प्रेम बसता

है देश के ये घर सब, सब घाट देश के हैं
हैं देश के ये वन सब, ये बाट देश के हैं।
प्रभु हम सरल बनें सब, तृष्णा न कोई रस ना,
हैं देश की हवाएँ, उर देश-प्रेम बसता।। माटी है...

हैं देश के सभी तन, मन देश के सभी हैं,
हैं भाई-बहन सारे, सुख-दुःख में इक सभी हैं।
हम सब विमल बनें प्रभु, महके सदा ही अँगना,
हैं देश की हवाएँ, उर देश-प्रेम बसता।।
माटी है मेरे देश की, ये जल है देश का हाँ...

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

कक्षा- 2, किसलय

696

तर्ज- आये हो मेरी जिन्दगी में....
गीत- टपका का डर बहुत है, ...

टपका का डर

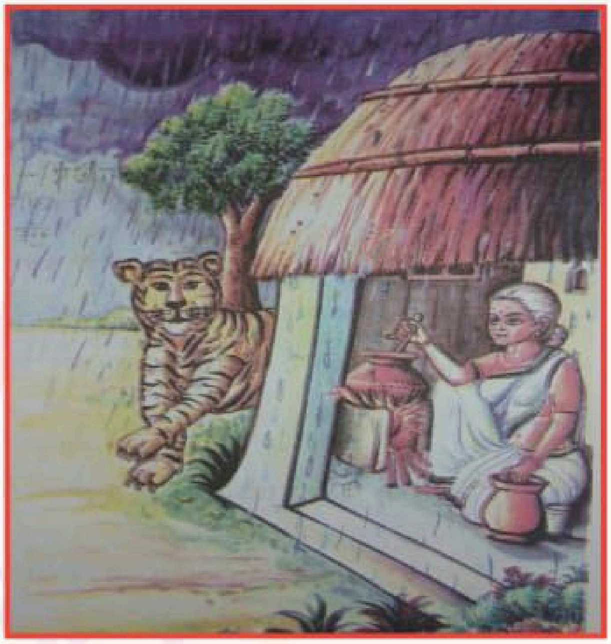

टपका का डर बहुत है, सब इससे बचके रहना।
इसे झूठ न समझना-हाँ, इसे मन में याद रखना।।
टपका का डर बहुत है.........।

बरसात का दिवस था, पानी बरस रहा था,
दादी का भीगता घर, बेबश ठिठुर रहा था।
परेशान दादी माँ थी-2, करती भी क्या वो करना,
टपका का डर बहुत है, सब इससे बचके रहना।

कुछ देर में टपाटप, ओले बरस पड़े थे,
छप्पर बहुत पुराना, तिनके नरम जड़े थे।
एक बाघ घर में आया, बरसात से था बचना,
टपका का डर बहुत है, सब इससे बचके रहना।।

दादी माँ भात अन्दर, बैठी बना रही थी,
पानी टपक रहा था, झुँझला के कह रही थी।
टपका का डर है जितना, है बाघ का न उतना,
टपका का डर बहुत है, सब इससे बचके रहना।।

सुनकर के बाघ समझा, कोई जानवर बड़ा है,
दादी तभी हैं कहती, टपका यहाँ खड़ा है।
यों सोचते ही भागा-2, पग सिर पे रखके अपना,
टपका का डर बहुत है,सब इससे बचके रहना।।
इसे झूठ न समझना, इसे मन में याद रखना।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

तर्ज- ये जीवन जितनी बार मिले,
गीत- रोटी खाऊँगी मैं तो सखी,

कक्षा- 3, पँखुड़ी **697**

पाठ- 3, बन्दर-बाँट

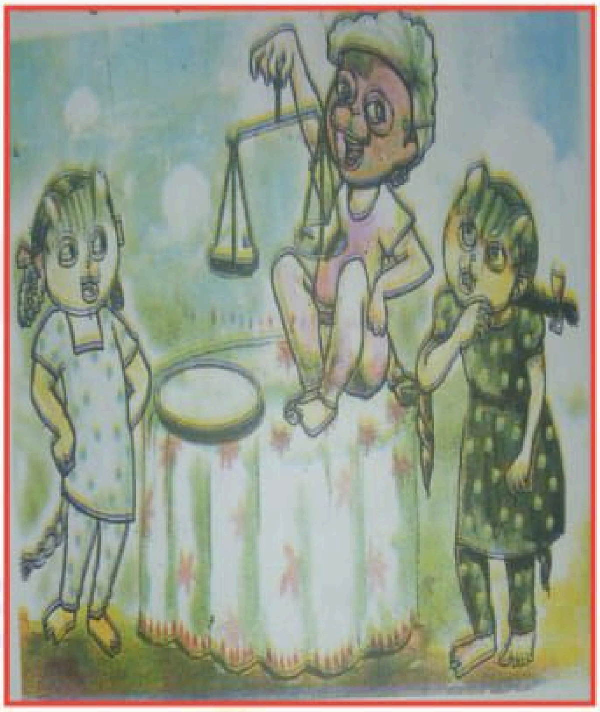

ये रोटी खाऊँगी मैं सखी, है मैंने उठायी देखो सखी।
नहीं मैं खाऊँगी मेरी सखी, तुमको दिखलायी मैंने सखी।।

तू क्यों परेशान मुझे करती, न ही ईश्वर से तू डरती।
लपकी टेबिल से है मैंने, पथ छोड़ मेरा दे मोहिं जाने।।
हम क्यों झगड़ें, हैं मित्र सखी, नहीं, मैं खाऊँगी सुनो सखी।

क्यों झगड़ रही हो बतलाओ, रोटी के लिए न घबराओ।
मैं कर दूँ ऐसा न्याय सखी, दोनों खाएँ ये रोटी सखी।।
ये रोटी खाऊँगी मैं.........सखी।।

बन्दर ने तराजू निकाली तब, आधी-आधी रोटी कर तब।
रख दी है तराजू के पलड़े, हुए छोटे-बड़े वे अब टुकड़े।।
लो बँटवारा कर दूँ मैं सखी, खाना मिल-जुल खुश होके सखी।।
ये रोटी खाऊँगी मैं.............सखी।।

ऊँचे-नीचे दोनों पलड़े, जो नीचा, उसकी रोटी तोड़े।
खाता जाये हर बार सखी, बन्दर खुश होकर देखो, सखी।।
ये रोटी खाऊँगी मैं............सखी।।

कभी ये पलड़ा ऊपर ये, कभी पलड़ा ऊपर होता ये।
टुकड़ा फिर तोड़ खाय बन्दर, न दोनों बराबर हों, लखकर।।
हुई दोनों अब बैचेन सखी, रोटी खाऊँगी मैं तो सखी।।

अब रोटी बची न, वह दोनों, हक्की-बक्की देखें दोनों।
झगड़े का ये ही अन्त सखी, रोटी खाऊँगी मैं तो सखी-2।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

तर्ज- तुझे इतना प्यार करुँ,
गीत- आज उठा मैं पहले,

कक्षा- 3,
पँखुड़ी

698

पाठ- 6
सबसे पहले

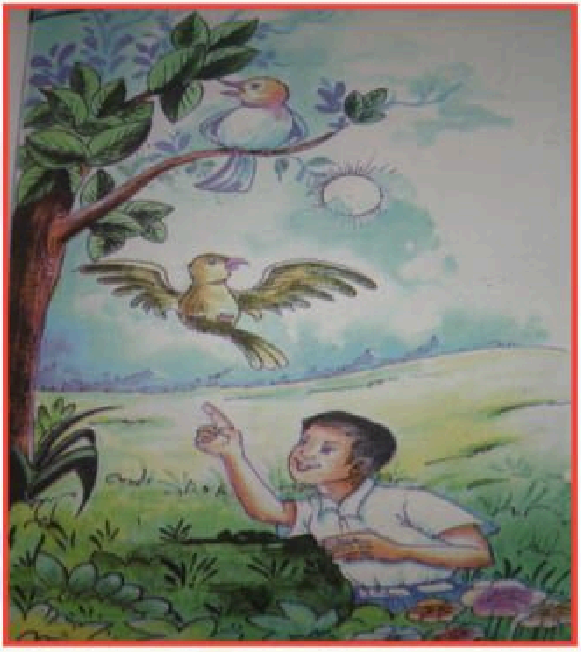

आज उठा मैं पहले,
चिड़ियों की आवाज सुनूँ।
तरु पल्लव डोले हैं,
चिड़ियों की आवाज सुनूँ।।

लाल, सुनहरे, पीले, बादल,
पूरब में देखे फैले।
चहक-चहक कर उड़ना देखा,
डैने का, हम संग खेले।।

चिड़ियों का डैने फड़काकर,
नभ में उड़े लखूँ।
आज उठा मैं पहले,
चिड़ियों की आवाज सुनूँ।।

आज चुनूँगा पहले सबसे,
पौधे पर खिलते ये फूल।
पूरब में रंगीन जलद हैं,
तोड़ूँ इनको आज समूल।।

आज फिरेगा, देखो,
कैसे पंछी बोलें? सुनूँ।
आज उठा मैं पहले,
चिड़ियों की आवाज सुनूँ।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

कक्षा- 2, किसलय

699

तर्ज- नगरी हो अयोध्या-सी,

गीत- मेरा नाम तो ममता है,

पाठ- 6

ममता का घर

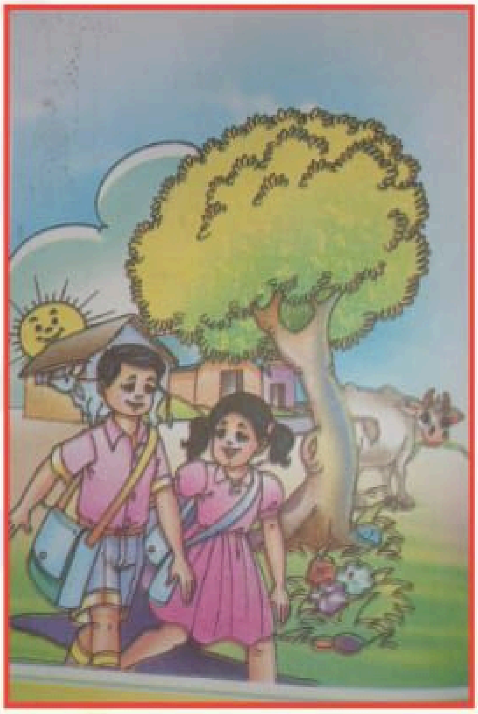

मेरा नाम तो ममता है, घर मानावाला में,
मिट्टी की दीवारें हैं गौएँ गौशाला में।
यहाँ फूस का छप्पर है, दालान बनी ऐसी,
वहीं आम के वृक्षों पर, मेरा भाई है झूला में।।

है छाँव, सुखद-शीतल, मैं, भाई झूलते हैं,
हम रोज सुबह उठकर, नित दातुन करते हैं।
फिर, पानी से नहा-धोकर, हल्का कुछ खाते हैं,
हम दोनों ड्रेस पहन, स्कूल को जाते हैं।।

जब हम घर आते हैं, तो भूख बहुत लगती,
बस्ते को टाँगते तब, फिर रोटी मिलती है।
धोते हैं हाथ-मुँह हम, फिर खाना खाते हैं,
माँ केंद्र में हों, खाना, बाबू जी बनाते हैं।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

कक्षा- 2, किसलय

तर्ज- मेरी झोंपड़ी के भाग आज खुल जायेंगे,
गीत- भोले-भाले ये कबूतर, आज घर आये हैं,

700

पाठ- 7, कबूतर

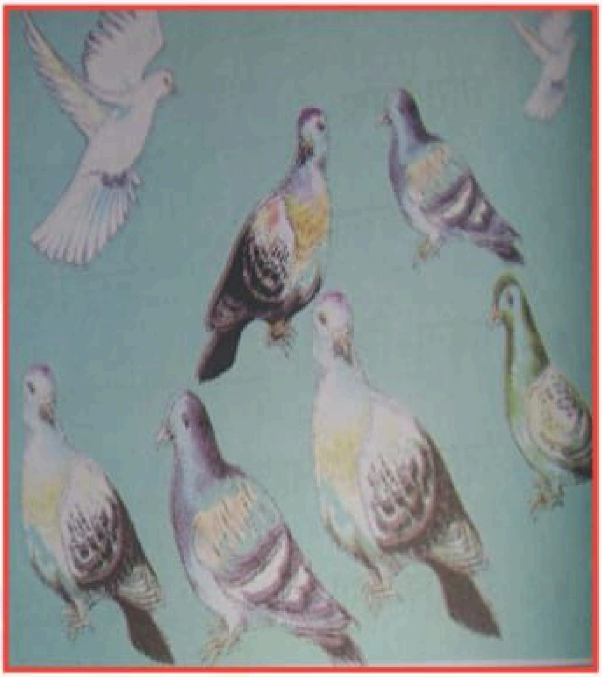

भोले-भाले ये कबूतर, आज घर आयें हैं,
घर आयें है, घर आयें हैं-2, घर आयें हैं।
भोले-भाले ये कबूतर, आज घर आये हैं-2

कुछ उजले-से लाल कबूतर,
कुछ छम-छम चलते कबूतर।
कुछ बैंजनी-से नीले, मेरे घर आये हैं-2,
भोले-भाले ये कबूतर, आज घर आये हैं-2।।

कुछ सुन्दर, प्यारे कबूतर,
करते इन्हें प्यार सभी नर।
आके अँगुली पे झूमें, लेते मुँह चूम ये,
घर आये हैं। घर आये हैं-2, घर आये हैं।।

कुछ रेशमी, श्वेत कबूतर,
रुनझुन-सी चाल मनोहर।
बोलें, गुटर-गुटर-गूँ, मिश्री-सा घोल,
घर आये हैं। घर आये हैं-2, घर आये हैं।।
भोले-भाले ये कबूतर, आज घर आये हैं-2।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

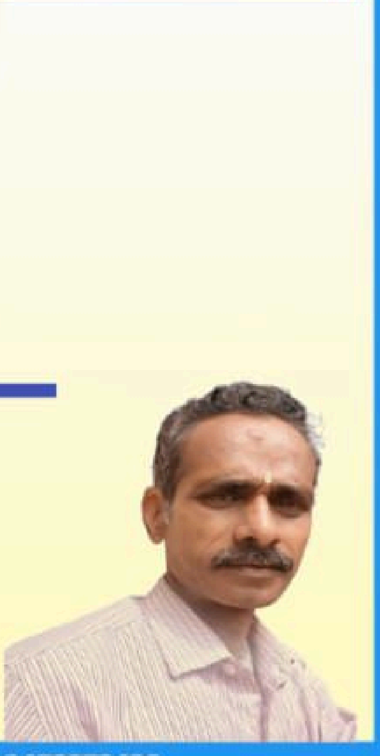

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

701

कक्षा- 6, संस्कृत-निधिः

तर्ज- जिन्दगी प्यार का गीत है,
गीत- खेल का ये तो मैदान है,

तृतीयः पाठः
अस्माकं परिवेशः

खेल का ये तो मैदान है,
खेलते हैं यहाँ बाल सारे।
गेंद से खेलते, दौड़ते हैं,
साथियों के सहित बाल सारे।।
खेल का ये तो मैदान है...।।

शिक्षा के हित ये शालाएँ सारीं,
छात्र पढ़ने को जाते यहाँ पे।
तुम भी पढ़ने को जाओ यहाँ पर,
देखो, जाते हैं ये बाल सारे।।
खेल का ये तो मैदान है...।।

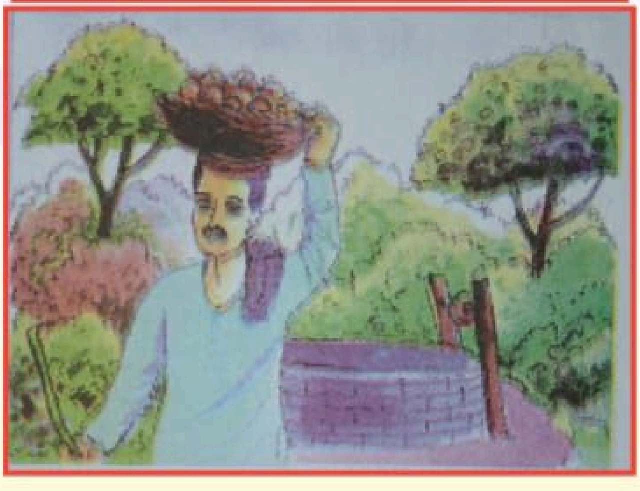

गाँव ढिंग एक उपवन सुशोभित,
लोग आते घरों से यहाँ पे।
वन का रक्षक सिंचाई करे नित,
पक के फल टूट गिरते धरा पे।।
खेल का ये तो मैदान है...।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

कक्षा- 6, संस्कृत-निधिः

चतुर्थः पाठः उदबोधनम्

702

तर्ज- ये गलियाँ ये चौबारा,

गीत- ये सुन्दर न्यारा,

ये जीवन सुन्दर न्यारा,
फिर है क्यों घमण्ड मन सारा।
मत रख अभिमान हृदय में,
तू लाया यहाँ कुछ भी नहीं।।

सबका कर सम्मान सदा हीं,
होवे जीवन मुदित, मनः ही।
ये जीवन सुन्दर न्यारा,
तू लाया यहाँ कुछ भी नहीं-2।।

मत तू शोक-दीनता भजना,
मन को शान्त सदा ही रखना।
मिथ्या-भाषण, व्यर्थ बोलना,
मत तू इन कुमार्ग पग रखना।।

दीन-दुखियों का पालन करना,
जो हों अनाथ, की सुनना।
सुत यदि पढ़े, सुता भी गहना,
शिक्षा नीति में दोष रहे ना।।
मत रख अभिमान हृदय में,
तू लाया यहाँ कुछ भी नहीं-2।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

कक्षा- 6, संस्कृत-निधिः

तर्ज- छम-छम नाचे देखो, वीर हनुमाना,
गीत- धरती है मेरी माँ का रुप हमने जाना,

703

षष्ठ: पाठ: धरती रक्षत

धरती है मेरी माँ का रुप, मैंने जाना।
रखना है इसे-2, हमें स्वच्छ हमने ठाना।।

नदियाँ, पर्वत, वन, झीलें हैं,
रवि, शशि, वायु, नभ, जल साजे।
देते प्राण-वायु वृक्ष, इनको बचाना,
धरती है मेरी माँ का रुप मैंने जाना।।

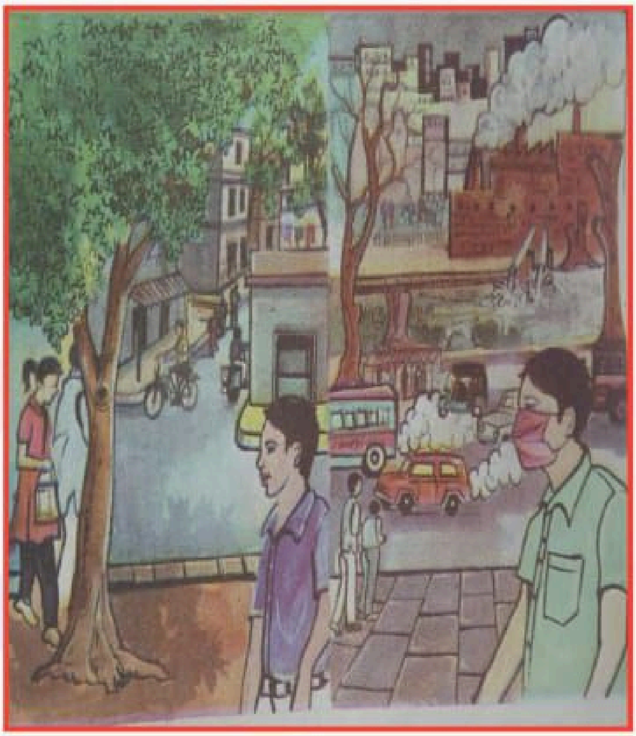

करते सभी हें पोषण अपना,
न इनका गलत उपयोग हो आगे।
वायु, वृक्ष से है सबका, जीवन सुहाना,
धरती है मेरी माँ का रुप, मैंने जाना।।

वृक्ष कटेंगे, फैले प्रदूषण,
प्रकृति खोय सुन्दरता अपनी।
फिर, आयेगी विपत्ति, ध्यान सबको दिलाना,
धरती है मेरी माँ का रुप, मैंने जाना।।
रखना है इसे-2, स्वच्छ, हमने ये ठाना।
धरती है मेरी माँ का रुप, मैंने जाना।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

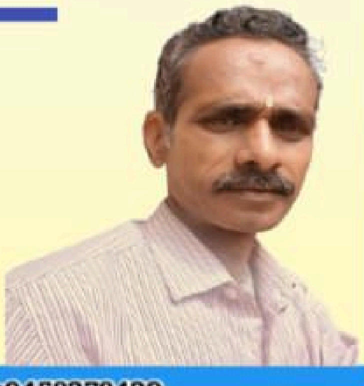

मिशन शिक्षण संवाद **गीतांजलि सृजन**

माह- मार्च, 2025

कक्षा- 6, संस्कृत-निधिः

704

तर्ज- हनुमान जनम उत्सव आया,
गीत- राघव, माधव, सीते, ललिते,

सप्तमः पाठः
विमानयानं रचयाम

राघव, माधव, सीते, ललिते,
हम वायुयान बनायेंगे-2।

नील गगन में विस्तृत सुन्दर,
स्वच्छ विहार करेंगे हम।
हम चन्द्रलोक को जायेंगे,
हम वायुयान बनायेंगे।।

ऊँचे वृक्ष, हिमालय, नभ कर,
पार चन्द्र ढ़िंग जायेंगे।
हम, तारों का हार बनायेंगे,
हम वायुयान बनायेंगे।।

शुक्र, चन्द्र व सूर्य, गुरु,
तारों को चुनके सजायेंगे।
हम सबको हार दिखायेंगे,
हम वायुयान बनायेंगे।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

कक्षा- 7, संस्कृत-मन्जूषा

705

द्वितीयः - चित्रपाठः
महात्मा गान्धी

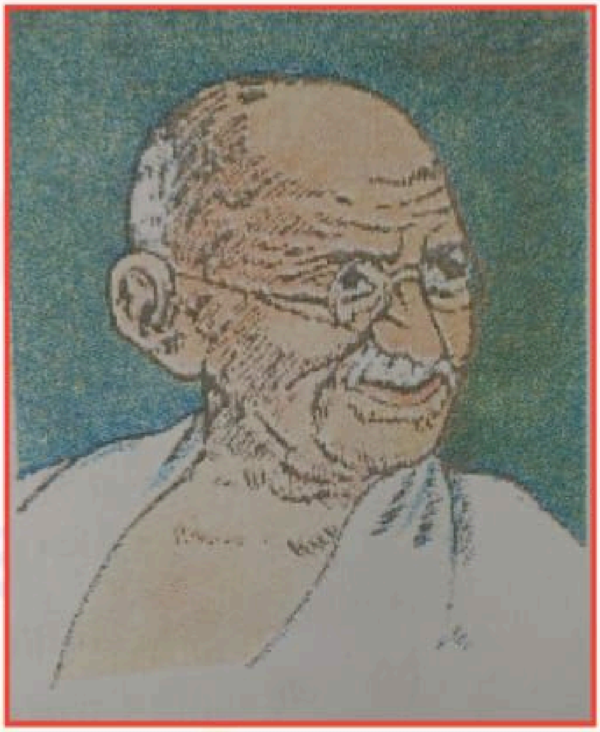

तर्ज- आया जनम दिन आया रे,
ये हैं राष्ट्रपिता श्री गान्धी,

ये हैं राष्ट्रपिता श्री गान्धी।
इन्हें करते नमन हैं।।

यह भारत के जनक कहाते-2,
पूरे जग में है नाम, ऐसे गान्धी।
इन्हें करते नमन हैं, ये हैं राष्ट्रपिता..।।

सत्य-अहिंसा पथ अपनाया,
सबसे उत्तम इसे कहते थे गान्धी।
इन्हें करते नमन हैं, ये हैं राष्ट्रपिता..।।

पराधीन निज देश छुड़ाया,
गोली खाय, स्वर्गगामी हुए गान्धी।
इन्हें करते नमन हैं, ये हैं राष्ट्रपिता..।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

कक्षा- 7, संस्कृत-मन्जूषा

तर्ज- आया जनम-दिन आया, मेरे बजरंगबली का

706

गीत- हम दीनों पे करुणा करेंगे,

हम दीनों पे करुणा दिखाएंगे।
इसमे खुशियाँ हमारी-2।।

तृतीय: - चित्रपाठ: अभिलाष:

कीन्हि प्रतिज्ञा, दीनजनों हित,
इसको सदा ही निभायेंगे।
इसमें खुशियाँ हमारी,
हम दीन्हों पे दिखाएंगे...हमारी।।

हुआ मनुज है दानव जग में,
इस मूढता को दूर भगायेंगे।
इसमें खुशियाँ हमारी,
दीनों पे करुणा दिखाएंगे।। इसमें..

तव उपदेशामृत जो छोड़े,
भोगता है विपत्ति, दु:ख छायेंगे।
इसमें खुशियाँ हमारी,
दीनों पे करुणा दिखाएंगे।। इसमें..

चेत सको तो चेत रे मानव,
गान गीता पुन: सब गाएंगे।
इसमें खुशियाँ हमारी,
दीनों पे करुणा दिखाएंगे।। इसमें...

अधिक कहें क्या? यही प्रार्थना,
गुणी बन प्रभु उर में बसायेंगे।
इसमें खुशियाँ हमारी,
दीनों पे करुणा दिखाएंगे।। इसमें...

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

कक्षा- 8, संस्कृत-भारती

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं,

गीत- प्रभो! तेजमय तुम, मुझे तेज दो।

707

वैदिक-वन्दना

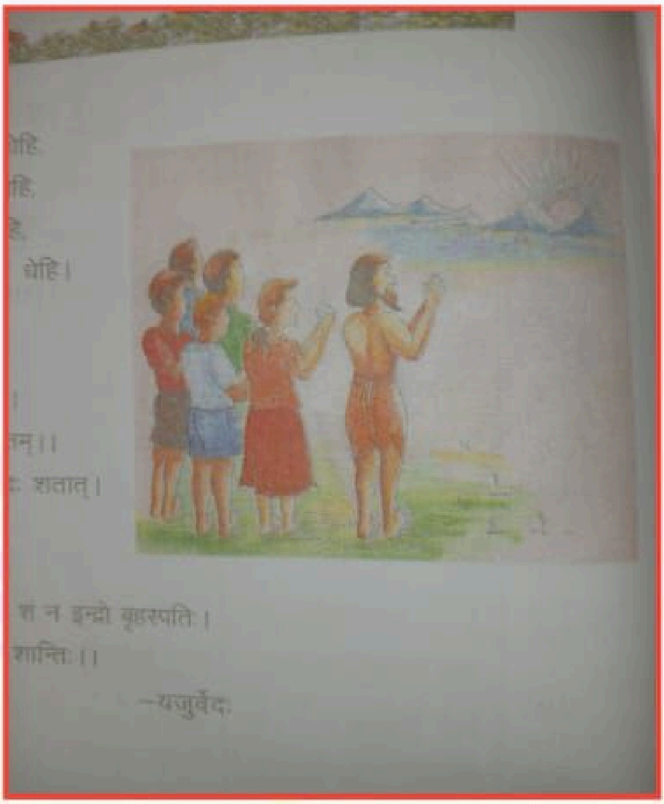

प्रभो! तेजमय तुम, मुझे तेज दो।
हो शक्तिमय तुम, मुझे शक्ति दो।।

बल की हो तुम खान, बल मुझको दीजे,
तुम ओजमय हो, मुझे ओज दीजे।
सौ वर्ष तक देखूँ-2, जियूँ वर्ष सौ,
हो शक्तिमय तुम, मुझे शक्ति दो।।

सौ वर्ष तक देखें, बोलें सदा हम,
सौ वर्ष तक सक्षम, जनहित करें हम।
पढ़ाये सभी को-2, वो अभिव्यक्ति हो,
हो शक्तिमय तुम, मुझे शक्ति दो।।

करें हम सदा ही, भला सब जनों का।
बरुण, सूर्य, देवेन्द्र, पितु, गुरुजनों का।।
सब हों कल्याणकारी-2, उर शान्ति दो,
प्रभो! तेजमय तुम, मुझे तेज दो।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

कक्षा- 8, संस्कृत-भारती

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं,

गीत- है नैमिषारण्य तीरथ गहन,

708

प्रथम: पाठ:, आश्रम:

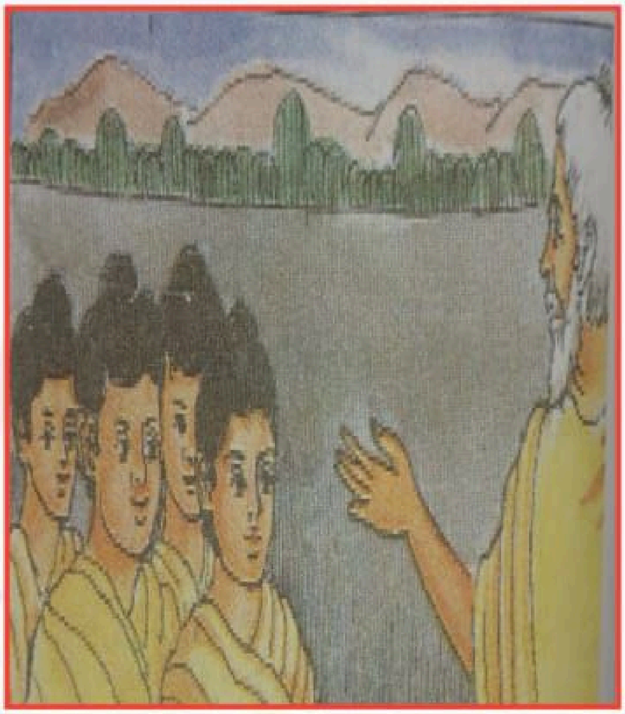

है नैमिषारण्य तीरथ गहन।
सीतापुर जिले में-2, करे ऋषि रमण।।

वहाँ एक आश्रम में, मुनि, गुरु, कवी हैं,
रहते बहुत छात्र, संग मे सभी हैं।
वट, नीम, पीपल की-2, छाया गहन,
है नैमिषारण्य तीरथ गहन।।

पनस, आमलक, पेरु हैं आम्र तरुवर,
पर्यावरण शुद्ध रखते, बरसकर।
धरा को नहाते-2, हैं घनघोर घन,
है नैमिषारण्य तीरथ गहन।।

बहती पवन तहँ, शीतल सलोनी,
स्वच्छन्द चरते हैं पशु, गायें नोंनी।।
कपी वृक्ष पर कूदें-2, चिड़ियाँ मगन,
है नैमिषारण्य तीरथ गहन।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

कक्षा- 8, संस्कृत-भारती

तर्ज- हुई आँख नम और ये दिल मुस्कुराया,
गीत- ये दीपावली का सुखद पर्व आया,

709

तृतीयः - पाठः
अस्माकं पर्वाणि

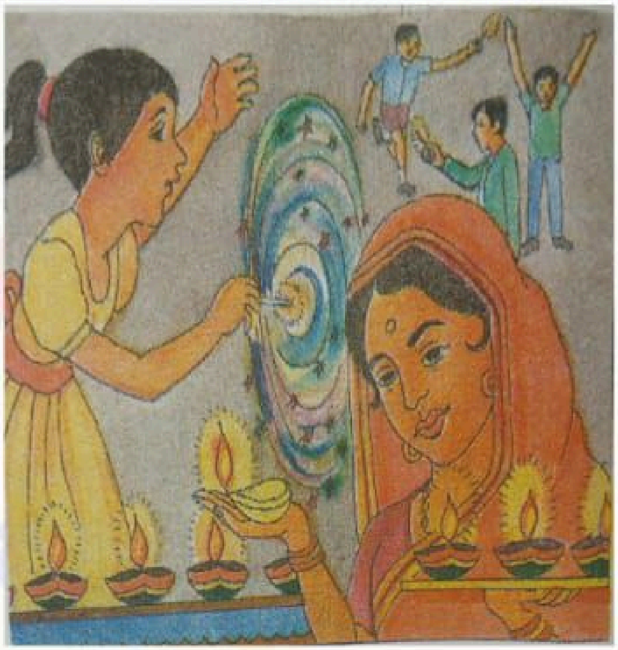

ये दीपावली का सुखद पर्व आया।
है प्रकाशों का, उत्सव, मन को भाया।।

कार्तिक अमावस्या आती जभी,
पर्व दीपवली का है आता तभी।
राम वनवास कर पूर्ण, छण सुख का आया,
है प्रकाशों का, उत्सव, मन को भाया।।

जीत रावण को जब राम, निज धाम आये,
अयोध्या सजी, सबने दीपक जलाये।
हुआ लक्ष्मी-पूजन सुखद छण वो आया,
है प्रकाशों का, उत्सव, मन को भाया।।

रक्षा-बन्धन, विजय-दशमी, होली बहुत हैं,
कई पर्व दीपोत्सव, इनमें प्रमुख हैं।
गुरुनानक जयन्ती है, पूनम को भाया,
ये दीपावली का, सुखद पर्व आया।।
है, प्रकाशों का उत्सव, मन को भाया।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान   शिक्षक का सम्मान   मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

माह- मार्च, 2025

कक्षा- 3, पँखुड़ी

तर्ज- हुई आँख नम और ये दिल मुस्कुराया,

गीत- था भारत ब्रिटिश की गुलामी में बच्चों!

710

पाठ 10

सुभाष चंद्र बोस

था भारत ब्रिटिश की गुलामी में बच्चों!
तब, विद्रोह भारी उठा, मेरे बच्चों!

बलिदान वीरों ने अपना किया,
एक थे उनमें ये बोस, निर्णय लिया।
करने आजाद भारत, हुए आगे बच्चों!
था भारत ब्रिटिश की गुलामी में बच्चों

थे जन्मे कटकर में था माघी महीना,
उड़ीसा में है ये, था आजाद जीना।
बी०ए० पास कर, आई०सी०एस० कीन्हीं बच्चों!
था भारत ब्रिटिश की गुलामी में बच्चों!

स्वदेश लौटकर, तय किया अपने मन में,
नहीं नौकरी वे करेंगे, स्वपन में।
प्रण लिया देश को, हम छुड़ायेंगे बच्चों!
था भारत ब्रिटिश की गुलामी में बच्चों!

फौज कीन्ही गठित, हिन्द आजाद ने,
चलो दिल्ली, दो खून, ये आजाद ने।
मैं तुम्हें दूँगा आजादी, नारा था बच्चों!
था भारत ब्रिटिश की गुलामी में बच्चों!

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह- मार्च, 2025

कक्षा- 3, पँखुड़ी

711

तर्ज- जीना है तो, हँसके जियो,

गीत- चलते अगर ये पेड़ जो,

पाठ- 8
अगर पेड़ भी चलते होते

चलते अगर ये पेड़ जो,
कितना सुन्दर! ये होता नजारा, हाँ।
ये वृक्ष हैं, तो जीवन सुखद,
आँगन में मैंने सँवारा, हाँ।।

करते मजा, कितने मिलकर के हम,
दें बाँध रस्सी, तने उनके हम।
चाहे जहाँ मन हो, ले जाते हम,
जो, गर्मी सताती, तो छिप जाते हम।।
छोटी, नमी, ठण्डी, आराम दें,
परोपकारी इनसा न प्यारा, हाँ।
चलते अगर.............नजारा, हाँ।।

जो भूख लगती हमें दोस्तों,
खाते मधुर तोड़ फल दोस्तों।
आती कहीं पर अगर बाढ़ जो,
चढ़ जाते झट उनके ऊपर ही तो।।

आता मजा भारी बड़ा, वृक्षों से है जग ये सारा, हाँ।।
चलते अगर ये पेड़ जो,
कितना सुन्दर ये होता नजारा, हाँ।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)